4

लूका की पुस्तक

मसीह, मनुष्य का पुत्र

अब हम सुसमाचार के तीसरे वृज़ांत अर्थात एक ऐसी पुस्तक पर आते हैं, जिसे अब तक की सबसे सुन्दर पुस्तक कहा गया है।

लूका की पुस्तक का परिचय

पुस्तक का लेखक

लूका की पुस्तक के लेखक का नाम पुस्तक में नहीं दिया गया है, परन्तु आम सहमति यही है कि इसका लेखक ''प्रिय वैद्य'' (कुलुस्सियों 4:14) लूका ही था।

लूका की पुस्तक के लेखक ने ही प्रेरितों के काम की पुस्तक भी लिखी (लूका 1:1-4 और प्रेरितों 1:1 की तुलना करें)। दो पुस्तकें स्पष्टतया एक ही पुस्तक के दो भाग बनाने के लिए लिखी गई थीं।[1] प्रेरितों के काम की पुस्तक से पता चलता है कि इसका लेखक प्रेरित पौलुस के साथ घूमता रहता था (देखें प्रेरितों 16:10; 20:5; 21:1)। लूका के अलावा, पौलुस के सभी ज्ञात सहयात्री, निकाले जा सकते हैं।[2] यह निष्कर्ष कि लूका तथा प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक डॉ. लूका ही है, कलीसिया की प्रारज़्भिक (बाइबल से बाहर की) परज़्परा से मेल खाता है।

लूका कौन था? हम उसे एक यूनानी नाम से जानते हैं[3]; वह सज़्भवतया जन्म से यूनानी था (देखें कुलुस्सियों 4:10, 11, 14)। इसका अर्थ यह हुआ कि नये नियम में योगदान देने वाला अन्यजाति लेखक केवल वही था। यह भी सज़्भव है कि वह अन्ताकिया में सबसे पहले मसीही बनने वालों में से एक था।[4] यदि यह सही है तो इसका अर्थ यह होगा कि कलीसिया की स्थापना के पन्द्रह वर्षों के अन्दर-अन्दर ही वह मसीही बना था।[5]

जबकि पहले बताया जा चुका है, लूका एक वैद्य या डॉज़्टर (कुलुस्सियों 4:14) और पौलुस का एक सहयात्री था। प्रेरितों के काम में ''हम'' वाले पद पौलुस के त्रोआस से फिलिप्पी में जाने (लगभग 51 ईस्वी) के साथ प्रेरितों 16 अध्याय में शुरू होते हैं। स्पष्टतया पौलुस के जाने पर लूका फिलिप्पी में ही रह गया था, ज़्योंकि वहां से ''हम'' वाले पद खत्म हो जाते हैं। उसने स्पष्टतया पौलुस के लौटने तक फिलिप्पी की मण्डली के साथ काम किया। वहां पर, ''हम'' फिर शुरू हो जाता है; पलिश्तीन की बन्दरगाह कैसरिया में पौलुस

के चार वर्ष के कारावास तक लूका उसके साथ घूमता रहा था। उन चार वर्षों के दौरान, लूका पास ही कहीं रहा, ज़्योंकि पौलुस के कैसरिया से रोम जाने के समय ''हम'' वाले पद फिर शुरू हो गए (पलिश्तीन में रहते हुए, लूका ने लूका 1:1-4 में वर्णित अधिकतम खोज की होगी।[6]) रोम में, लूका पौलुस का एक ''सहकर्मी'' था (फिलेमोन 24)। बाद में, पौलुस को दोबारा जेल होने और अपने मरने की प्रतीक्षा करते समय भी, लूका उसके साथ था (2 तीमुथियुस 4:11)।

पौलुस के साथ काम करने वाला एक पढ़ा-लिखा यूनानी और सक्रिय प्रचारक तथा मिशनरी लूका एक असाधारण व्यक्ति था। लूका की पुस्तक व प्रेरितों के काम के लेखक के रूप में वह मसीहियत के लिए कलीसिया का पहला महान इतिहासकार और साहित्यिक पक्षधर था।

पुस्तक की तिथि

लूका की पुस्तक के लिखने की तिथि दो दिशाओं में सीमित है। एक ओर यीशु की मृत्यु के बाद कुछ समय बीत चुका था और लूका का मन परिवर्तन हो चुका था, जो यीशु के जीवन के विवरणों को इकट्ठा करने के लिए पर्याप्त था (लूका 1:1)। दूसरी ओर, प्रेरितों के काम (साथ की पुस्तक) स्पष्टतया रोम में पौलुस के आरज़्भिक दो सालों, अर्थात लगभग 62 ईस्वी के अन्त में लिखी गई (प्रेरितों 28:30)। अधिकतर रूढ़िवादी लेखक लूका के लेखन कार्य को 60 ईस्वी के लगभग का मानते हैं।[7]

पुस्तक की भूमिका

लूका की पुस्तक की भूमिका दूसरों से हटकर है:

> इसलिए कि बहुतों ने उन बातों का, जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया। इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सज़्पूर्ण हाल आरज़्भ से ठीक-ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं। कि तू यह जान ले, कि वे बातें, जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं (लूका 1:1-4)।[8]

आइए उस परिचय से कुछ मुज़्य बातों पर विचार करते हैं:

''इसलिए कि बहुतों ने उन बातों का, जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है'': स्पष्टतया, यीशु के बारे में एक मूल विचार था, जो कलीसिया में पाया जाता था।

''... जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुंचाया'': ''इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक'' शज़्द सज़्भवतया मुज़्य रूप से प्रेरितों के लिए कहे गए हैं (देखें प्रेरितों 1:21, 22), परन्तु इनसे अलग-अलग विश्वासों की प्रमाणिकता का भी संकेत मिलता है।

''... इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस'': ''हे श्रीमान'' शब्द किसी अधिकारी को सम्मान से सम्बोधित करने के लिए थे। ''थियुफिलुस'' एक यूनानी नाम है, जिसका अर्थ ''परमेश्वर से प्रेम करने वाला'' है। यह उन सबके लिए हो सकता है, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, परन्तु सम्भवतया यह एक विशेष व्यक्ति के लिए है। शायद यह व्यक्ति लूका का संरक्षक ही था और उसकी पुस्तक के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता देता था।[9]

''... मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल'' इस बात का संकेत हो सकता है कि मसीह के जीवन का वृत्तांत लिखने वाले कुछ लोग तथ्यों की गहराई तक खोजबीन *नहीं* करते थे।[10] परमेश्वर की प्रेरणा रहित कई प्रारम्भिक हस्तलेख हैं, जो यीशु के जीवन के वृत्तांत होने का दावा करते हैं और आज भी अस्तित्व में हैं, परन्तु कोरी बकवास हैं।

''... आरम्भ से'': स्पष्टतया, लूका के कलीसिया के इतिहास के प्रारम्भ में ''प्रत्यक्षदर्शियों'' से सम्पर्क थे।

''... ठीक-ठीक जांच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूं'': इससे संकेत मिल सकता है कि लूका ने मसीह के जीवन के क्रमानुसार वृत्तांत लिखने के लिए सुसमाचार के अन्य लेखकों से अधिक लगन से प्रयास किया। परन्तु जैसा हम देखेंगे, लूका का विवरण भी पूरी तरह से क्रमानुसार नहीं है। इसलिए ''क्रमानुसार'' शब्द सम्भवतया *सुव्यवस्थित* अर्थात तर्कसंगत, सोच समझकर लिखने को कहा गया हो सकता है।

''... कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं'': कुछ लोगों को लगता है कि ''वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है'' सामान्य शिक्षा के लिए हैं। जो भी हो, ये शब्द दोबारा प्रारम्भिक कलीसिया के सामान्य विश्वास के होने पर ज़ोर देते हैं।

लूका को मसीहियत के सबसे पहले औपचारिक ''आलोचक'' के रूप में माना जा सकता है: उसने कई बातों को केवल इसलिए नहीं माना कि लोग उन पर विश्वास करते हैं, बल्कि उसने अच्छी तरह से तथ्यों को जांचा और परखा था। इस कारण जो कुछ उसने लिखा वह ''ठीक-ठीक'' था। उसने जैसे अपने पाठकों को उन विवरणों की जांच करने का निमन्त्रण दिया, क्योंकि उसने बड़ी सावधानी से वह ऐतिहासिक जानकारी दी थी, जिसे परखा जा सकता था (देखें 1:5; 2:1, 2; 13:1, 2)। पुरातत्व खोजों से इस बात की पुष्टि होती है कि लूका विशुद्ध इतिहासकार था, जिसने मसीह के जीवन तथा प्रारम्भिक कलीसिया के अपने विवरण को बहुत महत्व दिया।

पुस्तक का विशेष स्रोत

लूका द्वारा इस्तेमाल किए गए स्रोतों के सम्बन्ध में, विशेष टिप्पणी प्रेरित पौलुस के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में की जानी चाहिए। आम सहमति यही है कि प्रारम्भिक कलीसिया के दो महान व्यक्ति पतरस और पौलुस ही थे। इसके साथ ही, हम यह भी मान लेंगे कि यीशु के जीवन तथा शिक्षा के बारे में लिखना इस महत्वपूर्ण कार्य पर उनके प्रभाव के बिना पूरा नहीं हो सकता था। यदि प्राचीन (परमेश्वर की प्रेरणा रहित) परम्पराएं सही हैं,

तो दोनों का योगदान इसमें था: जैसा मरकुस की पुस्तक के एक पाठ में कहा गया है, मरकुस को पतरस के अनुसार सुसमाचार लिखने वाला माना जाता है। इसी प्रकार, प्रारम्भिक परम्पराएं कहती हैं कि लूका ने पौलुस के अनुसार सुसमाचार लिखा।

पौलुस यीशु की सेवकाई के दौरान उसका चेला नहीं था; परन्तु, प्रकाशन के द्वारा, पौलुस को मसीह के जीवन के सम्बन्ध में मूल जानकारी मिली (देखें 1 कुरिन्थियों 11:23; 15:3-8; प्रेरितों 20:35)। लूका ने यीशु के बारे में महान विषयों पर प्रचार करते हुए उसे कई बार सुना होगा।

इसका अर्थ यह नहीं है कि लूका पौलुस से मिली जानकारी पर ही निर्भर था। उसने अपनी व्यापक खोज को भी मिलाया।[11] फिर भी परमेश्वर की प्रेरणा रहित प्राचीन लेखकों का बहुमत यही है कि लूका ने पौलुस का सुसमाचार लिखा। इस से इस तथ्य को बल मिलता है कि लूका की पुस्तक स्पष्टतया एक अन्यजाति श्रोताओं के लिए और विशेषतया यूनानियों के लिए लिखी गई थी और[12] पौलुस अन्यजातियों का प्रेरित (प्रेरितों 26:16-18) और सम्भवतया यूनानियों में सुसमाचार सुनाने वाला पहला व्यक्ति था (प्रेरितों 17)।

पुस्तक में जिन शब्दों पर ज़ोर दिया गया

लूका ने अपनी यह पुस्तक अन्यजाति श्रोताओं के नाम लिखी, क्योंकि जब उसने पहाड़ी उपदेश (या इसके जैसा उपदेश) लिखा, तो उसने "व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं" का उल्लेख नहीं किया। उसने जानबूझकर "रब्बी" और "होसन्ना" जैसे यहूदी शब्दों का अपनी पुस्तक में इस्तेमाल नहीं किया। उसने अपने पाठकों के लिए पलिश्तीन की भौगोलिक स्थिति बड़े ही ध्यान से समझाई। इस बात पर आम सहमति है कि उसका निशाना यूनानी थे। (यह पहले ही कहा गया है कि लूका स्वयं एक यूनानी था और उसने अपनी पुस्तकों में एक यूनानी अधिकारी को सम्बोधित किया।)

लूका के समय के यूनानी लोग शिक्षित, सुन्दरता व कला के प्रेमी थे। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि लूका के विवरण में विलक्षण साहित्यिक विशेषता है। यह सम्पूर्ण, व्यवस्थित व श्रेष्ठ है। मनुष्य के उद्धार से अपने सम्बन्ध के अलावा, यह एक उत्कृष्टतम पुस्तक है। एक प्रारम्भिक परम्परा के अनुसार लूका एक कलाकार था। उसने कभी चित्रकारी की हो या नहीं, परन्तु शब्द चित्र बनाने वाला वह ज़बर्दस्त "कलाकार" था: अध्याय 1 और 2 में चार सुन्दर कविता-गीत पढ़ें, जिन्हें केवल लूका ने ही शामिल किया है। अध्याय 15 में उड़ाऊ पुत्र जैसी हृदय-स्पर्शी कहानियों का आनन्द लें। लूका के विवरण सादगी तथा महत्व का नमूना हैं।

यूनानी लोग सिद्ध पौरुष के भी कायल होते थे। उन्हें सिद्ध पौरुष से इतना प्रेम था कि उन्होंने अपने देवताओं को पुरुष की आकृति में बनाया था। ऐसी सोच वाले लोगों को, लूका ने यीशु को मनुष्य के सिद्ध पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया। यीशु का मनुष्य होना लूका की पुस्तक में प्रमुख था। इस पर ज़ोर देने के कुछ उदाहरण ये हैं:

- लूका के ऐतिहासिक हवालों से यीशु को मनुष्य के इतिहास में भागीदार बताया गया था।
- लूका द्वारा दी वंशावली (लूका 3) मत्ती द्वारा दी वशांवली से भिन्न है (मत्ती 1): मत्ती की वंशावली में यूसुफ के द्वारा यीशु की *कानूनी* रेखा पर ज़ोर है। इसके विपरीत, लूका की वंशावली मरियम के द्वारा, आदम तक पीछे ले जाकर यीशु की *शारीरिक* रेखा पर ज़ोर देती है। लूका ने इस प्रकार दिखाया कि यीशु सब लोगों की मानवीयता में सहभागी था।
- केवल लूका ने ही यीशु के जन्म का विवरण लिखा (लूका 2)। इन विवरणों में उसकी मानवीयता पर ज़ोर दिया गया है। उसके माता-पिता (दूसरे लोगों की तरह) नाम लिखवाने के लिए बैतलहम में गए थे। यीशु का जन्म एक साधारण सी चरनी में हुआ था। उसे देखने के लिए सबसे पहले आने वाले चरवाहे ही थे।[13]
- केवल लूका ने ही यीशु के प्रारम्भिक जीवन के बारे में बताया है। यीशु का बड़ा होना असाधारण था, परन्तु अप्राकृतिक नहीं। वह दूसरे बच्चों की तरह ही बड़ा हुआ (2:40, 52)।
- लूका ने ज़ोर देकर कहा कि यीशु का बपतिस्मा उसी समय हुआ, जब दूसरे लोगों को बपतिस्मा दिया जा रहा था (3:21)।
- जब यीशु की परीक्षा हुई (4:1-13), तो उसका सामना मनुष्यजाति पर पड़ने वाली सब प्रकार की परीक्षाओं से हुआ।
- यीशु की पूरी सेवकाई में, उसके मनुष्य होने पर ज़ोर दिया गया था: वह रोया (19:41); उसने प्रार्थना की (3:21; 5:16; 6:12); उसे तरस आया (7:13; 10:33; 15:20); वह मरा (23:46)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि लूका ने यीशु को केवल एक मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया। यीशु *सिद्ध* मनुष्य था; वह परमेश्वर-मनुष्य था; वह हमारा उद्धारकर्ता है। हम तो जन्म के समय अबोध होते हैं परन्तु वह *पवित्र* था (लूका 1:35)। लूका का विवरण यीशु के जीवन में पवित्र आत्मा के काम पर ज़ोर देता है।[14] लूका की पुस्तक में पवित्र आत्मा के मत्ती और मरकुस दोनों से अधिक हवाले मिलते हैं।

पुस्तक की विशेषताएं

पुस्तक की अधिकतर विशेषताएं उन गुणों से सम्बन्धित हैं, जिनकी चर्चा पहले की गई है।

लूका की पुस्तक में *एक विलक्षण चिकित्सकीय दृष्टिकोण* है। लूका के विवरण में अक्सर एक चिकित्सक के मन का पता चलता है। कई बार उसने डॉक्टरी में इस्तेमाल होने वाले शब्दों का इस्तेमाल किया। (उदाहरण के लिए, 18:25 में डॉक्टर की सूई के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया।) केवल लूका ने ही लिखा है कि यीशु का "पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी

बूंदों के समान'' बन गया था (लूका 22:44)। लूका ने उस स्त्री के बारे में, जिसे बारह वर्षों से लहू बहता था, बताते हुए मरकुस की अपेक्षा चिकित्सकों के लिए अधिक सहानुभूति दिखाई (तुलना करें मरकुस 5:25, 26 और लूका 8:43)। निजी तौर पर, मुझे खुशी है कि एक डॉक्टर ने कुंवारी से जन्म की, चंगाई के आश्चर्यकर्म की, इस तथ्य की कि यीशु सचमुच में मरा, और इस तथ्य की कि वह शारीरिक रूप से जी उठा, पुष्टि की है।

मसीह के जीवन के इतिहास के रूप में, लूका की पुस्तक *सबसे व्यापक* है। किसी भी वृज़ांत में सब बातें एक साथ नहीं मिलती हैं (यूहन्ना 21:25), परन्तु लूका की पुस्तक यीशु के जीवन का सबसे अधिक प्रतिनिधित्व करती है। यह सुसमाचार की चारों पुस्तकों में सबसे लज़्बी है।[15]

सुसमाचार के इस वृज़ांत में अन्य सहदर्शी विवरणों से *अधिक विलक्षण सामग्री* है। जैसे पहले कहा गया है, कि केवल लूका ने ही यीशु के जन्म तथा बचपन के बारे में लिखा है। अलग पदों के अपवाद के साथ, 9:51 से 18:30 की सामग्री लूका के लिए विलक्षण है। केवल लूका ने ही इज़्माऊस के चेलों को पुनरुत्थान के दर्शन (24:13-35) और स्वर्गारोहण (24:50-53; प्रेतिरों 1:9-11 भी देखें) का विवरण लिखा है।

लूका के वृज़ांत में *प्रार्थना* पर विशेष ज़ोर दिया गया है। इस पुस्तक में दिखाया गया है कि यीशु अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं में, प्रार्थना कर रहा था (3:21; 6:12, 13; 9:18, 28, 29)।

अपने वृज़ांत में, लूका ने *निर्बलों, ज़रूरतमंदों और निकाले हुओं* पर विशेष ध्यान दिया। स्त्रियों को कई जगह दिखाया गया है। (अध्याय 1 और 2 में मरियम और इलिशबा, के साथ अध्याय 7 में नाईन नगर की विधवा और पापिन स्त्री की कहानियों पर दिए गए ज़ोर पर ध्यान दें।) सामाजिक तौर पर निकाले गए लोगों पर सहानुभूति दिखाई गई है (दयालु सामरी [10:30-37], उड़ाऊ पुत्र [15:11-32], दीन चुंगी लेने वाले [18:13, 14], जज़्कई [19:2-10], और क्रूस पर डाकू [23:43])। यीशु ''चुंगी लेने वालों का और पापियों का मित्र'' था (लूका 7:34)।

पुस्तक का उद्देश्य

टीकाकारों ने लूका की पुस्तक को ''उद्धार का सुसमाचार'' और ''पापी के लिए सुसमाचार'' नाम दिया है। सुसमाचार का केवल यही सहदर्शी वृज़ांत है, जिसमें यीशु को ''उद्धारकर्ज़ा'' के रूप में दिखाया गया है (लूका 2:11)। पुस्तक का मुज़्य पद 19:10 है: ''ज़्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।''

पुस्तक के विभाजन

लूका की पुस्तक स्वाभाविक ही (1) मसीह का प्रारज़्भिक जीवन, (2) उसकी सेवकाई, (3) उसकी मृत्यु के आस-पास की घटनाएं, और (4) पुनरुत्थान में बंट जाती है। दूसरे विभाजन अर्थात उसकी सेवकाई में भी दो विलक्षण भाग हैं। इससे लूका की पुस्तक

पर पांच मुज़्य विभाजन मिल जाते हैं।

4:14 से 9:50 में दिखाया गया है कि यीशु की सेवकाई के प्रारज़्भिक भाग में ज़ोर उसकी गतिविधियों और उसके आश्चर्यकर्मों पर है, यद्यपि इसमें कुछ शिक्षा है। यह भाग गलील में उसकी सेवकाई के बारे में बताता है। अधिकतर सामग्री दूसरे सहदर्शी वृज़ांतों से मिलती-जुलती है।

दूसरा भाग, 9:51 से 18:30, लूका का ही ढंग है। (सुसमाचार के दूसरे वृज़ांतों में यह बहुत कम मिलता है।) यह भाग यीशु को कम से कम मन में यरूशलेम में ''जाने का निश्चय करते'' दिखाता है (देखें 9:51)। सामान्यतया, जैसा कि लूका ने लिखा है, इसे यहूदिया-पिरीया की सेवकाई कहा जाता है। इन अध्यायों में आश्चर्यकर्मों तथा काम का विवरण है, परन्तु ज़ोर शिक्षा पर ही है। आरज़्भ में तो, यह भाग शिक्षा और दृष्टांतों का संग्रह ही लगता है, परन्तु इसमें लूका ने अपने अन्यजाति पाठकों के लिए यीशु के मिशन का अर्थ समझाने के लिए नई सामग्री का इस्तेमाल किया है।

लूका की पुस्तक की एक रुपरेखा

I. मनुष्य के पुत्र की तैयारी (1:1-4:13)।

क. भूमिका (1:1-4)।

ख. जन्म तथा शैशवकाल।

1. जकर्याह के पास यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म की घोषणा (1:5-25)।
2. मरियम के पास यीशु के जन्म की घोषणा (1:26-38)।
3. मरियम का इलिशबा के पास जाना (1:39-56)।
4. यूहन्ना का जन्म और प्रारज़्भिक जीवन (1:57-80)।
5. यीशु का जन्म (2:1-7)।
6. चरवाहों के पास यीशु के जन्म की घोषणा (2:8-20)।
7. मन्दिर में यीशु का अर्पण किया जाना (2:21-39क)।

ग. नासरत में लौटना और यीशु का बचपन (2:39ख, 40)।

घ. बारह वर्ष का होने पर यीशु का मन्दिर में जाना (2:41-50)।

ङ. यीशु का नासरत में लौटना और बड़ा होना (2:51, 52)।

च. लगभग तीस वर्ष की आयु में यीशु की सेवकाई का आरज़्भ। (यीशु की आयु का वर्णन केवल लूका ही करता है [3:23]।)

1. यूहन्ना की सेवकाई (पूर्वाभास में यूहन्ना की गिरज़्तारी का उल्लेख) (3:1-20)।
2. यीशु का बपतिस्मा और वंशावली (3:21-38)।
3. यीशु की परीक्षा (4:1-13)।

छ. इस पहले काल को याद रखने में सहायता के लिए, कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं:

1. बैतलहम में जन्म।
2. नासरत में लड़कपन।
3. यरदन में बपतिस्मा।
4. इतिहास में पृष्ठभूमि (यीशु की वंशावली)।
5. शैतान से युद्ध (परीक्षा)।

II. मनुष्य के पुत्र की सामर्थ (4:14-9:50)।

क. सेवकाई आरम्भ हुई।

1. गलील में: यीशु के प्रचार की शुरुआत (4:14, 15)।
2. नासरत में पहली बार ठुकराया जाना (4:16-30)।
3. कफ़रनहूम में प्रचार तथा चंगाई (4:31-41)।
4. सुनसान स्थानों में और फिर गलील में जाना (4:42-44)।
5. आश्चर्यकर्म से मछलियों का पकड़ा जाना-और मनुष्यों के पकड़ने की बुलाहट (5:1-11)।
6. एक कोढ़ी का चंगा किया जाना; प्रार्थना के लिए अलग होना (5:12-16)।

ख. सेवकाई की आलोचना हुई।

1. आदमी को छत में से नीचे उतारा गया (5:17-26)।
2. लेवी को बुलाना और पापियों के साथ खाना (5:27-32)।
3. उपवास के सम्बन्ध में आलोचना (5:33-39)।
4. सब्त पर आलोचनाएं (6:1-11)।

ग. सेवकाई चलती रही (बढ़ती हुई गति से)।

1. प्रार्थना और उसके बाद बारह की नियुक्ति (6:12-16)।
2. मैदानी उपदेश (6:17-49)।
3. कफ़रनहूम में; एक सूबेदार के सेवक का चंगा किया जाना (7:1-10)।
4. नाईन नगर में; एक विधवा के पुत्र को जिलाना (7:11-17)।
5. यूहन्ना के पास और उसके बारे में यीशु की गवाही (7:18-35)।
6. शमौन फरीसी के घर में (7:36-50) (आयतें 41-43 लूका के लिए विशेष)।
7. गलील में एक और बार जाना (8:1-3)।
8. दृष्टांत (बीज बोने वाला और दीपक) और यीशु के असली रिश्तेदार (8:4-21)।
9. झील पार करना और तूफ़ान को शांत करना (8:22-25)।
10. गिरासेनियों के देश में: दुष्ट आत्मा वाला मनुष्य (8:26-39)।

11. झील के पार वापस आना; याईर की बेटी को चंगा करना और साथ जुड़ा आश्चर्यकर्म (8:40-56)।

घ. सेवकाई का चरम।

1. बारह को बाहर ज़ेजना (और हेरोदेस का ध्यान खींचना) (9:1-10क)।
2. बैतसैदा के निकट एक सुनसान जगह में; पांच हज़ार लोगों को खाना खिलाना (9:10ख-17)।
3. प्रार्थना-और महान अंगीकार (9:18-22)। यीशु के चेलों को *अपना-अपना* क्रूस उठाने की चुनौती दी गई (9:23-27)।
4. रूपांतरण (9:28-36)।
5. पहाड़ से नीचे आना; अशुद्ध आत्मा वाला एक बच्चा चंगा किया गया; चेलों को दोबारा यीशु के मरने के बारे में बताया गया (9:37-45)।
6. समझने में चेलों की असफलता: सबसे बड़ा होने पर विवाद (और अपने पीछे न चलने वाले को दण्ड देने की इच्छा) (9:46-50)।

III. मनुष्य के पुत्र का प्रचार (9:51-18:30)।

क. यीशु ने ''यरूशलेम जाने का विचार दृढ़ किया'' (देखें 9:51)।

1. सामरिया से होकर जाना (''आकाश से आग गिराने'' की घटना) (9:51-56)।
2. होने-वाले चेले (9:57-62)।
3. सज़र चेलों को भेजना (10:1-24)।
4. एक व्यवस्थापक द्वारा परीक्षा और दयालु सामरी की कहानी (10:25-37)।
5. बैतनिय्याह में: मरियम की पसन्द ''उज़म भाग'' (10:38-42)।
6. सामान्य शिक्षा:
   - क. प्रार्थना-और प्रार्थना पर निर्देश (11:1-13)।
   - ख. आरोप-और दुष्टात्माओं, आज्ञाकारिता और चिह्न की मांग करने पर शिक्षा (11:14-36)।
   - ग. एक फरीसी के साथ खाना; फरीसियों और शास्त्रियों पर हाय (11:37-54)।
   - घ. भीड़ और सामान्य शिक्षा (12:1-12)।
   - ङ. विरासत के विषय में एक प्रश्न-और धनी मूर्ख की कहानी (12:13-21)।
   - च. चिन्ता, स्वर्गीय धन, चौकसी, भण्डारीपन आदि पर शिक्षा (12:22-59)।
   - छ. एक ऐतिहासिक हवाला; मन फिराव पर शिक्षा (13:1-9)।

7. दुर्बलता वाली स्त्री को चंगाई देना; आलोचना (13:10-17)।
8. राज्य की तुलना राई के बीज और खमीर से (13:18-21)।

ख. यीशु ''यरूशलेम की ओर'' जाने लगता है (13:22)।

1. यह शिक्षा कि केवल कुछ लोग ही उद्धार पाएंगे (13:23-30)।
2. गलील में सार्वजनिक रूप से वापस आना; यीशु को हेरोदेस के बारे में चेतावनी दी गई; यीशु की बात कि उसका यरूशलेम में मरना आवश्यक है (''हे यरूशलेम! हे यरूशलेम!''; आयत 34) (13:31-35)।
3. सब्त के दिन एक फरीसी के साथ खाना और जलन्धर के एक रोगी को चंगा करना (14:1-6)। पर्वों पर एक के बाद एक शिक्षा:
   क. विवाह में मुख्य जगह पर एक दृष्टांत (14:7-11)।
   ख. केवल मित्रों को ही न बुलाने पर एक सबक (14:12-14)।
   ग. बड़े भोज का दृष्टांत (14:15-24)।
4. चेले बनने का मूल्य (14:25-35)।
5. पापियों के साथ खाने के लिए आलोचना (15:1, 2)। फरीसियों और शास्त्रियों के विरुद्ध एक के बाद एक सबक, जिनका ध्यान खोई हुई आत्माओं के बजाय सांसारिक वस्तुओं पर रहता था:
   क. खोई हुई वस्तुओं के दृष्टांत (15:3-32)।
   ख. अधर्मी भण्डारी का दृष्टांत और सामान्य शिक्षा (16:1-18)।
   ग. धनी मनुष्य और लाज़र की कहानी (16:19-31)।
   घ. ठोकरों और विश्वासपूर्वक आज्ञापालन पर सामान्य शिक्षा (17:1-10)।

ग. यरूशलेम के मार्ग में; यीशु का सामरिया और गलील में से होकर जाना (17:11)।

1. दस कोढ़ी (17:11-19)।
2. आने वाले राज्य और उसके द्वितीय आगमन पर शिक्षा (17:20-37)।
3. प्रार्थना पर दृष्टांत:
   क. हठी विधवा (18:1-8)।
   ख. फरीसी और चुंगी लेने वाला (18:9-14)।
4. छोटे बच्चों को आशीर्वाद देना (18:15-17)।
5. जवान धनी अधिकारी और मसीह के पीछे चलने के प्रतिफल (18:18-30)।

IV. मनुष्य के पुत्र का दुख भोगना (18:31-23:56)।

क. अन्तिम बार जाना (पहले जितनी बार भी यरूशलेम में जाना हुआ, वह सब इसी की तैयारी थी):

1. यीशु का अपने चेलों को बताना कि वे उसकी *मृत्यु* के लिए यरूशलेम में जा रहे थे (18:31-34)।
2. यरीहो में: अन्धे आदमी को चंगा करना (18:35-43)।
3. यरीहो में: जक्कई (19:1-10)।
4. यरूशलेम के निकट: मोहरों का दृष्टांत (19:11-27)।

ख. अन्तिम सप्ताह:

1. रविवार: विजयी प्रवेश (19:28-40)।
2. सोमवार:
   क. यरूशलेम पर रोना; बेचने वालों को बाहर निकालना (19:41-46)।
   ख. यीशु द्वारा प्रतिदिन शिक्षा; उसके शत्रुओं का षड्यन्त्र (19:47, 48)।
3. मंगलवार: प्रश्नों का दिन।
   क. ''किस अधिकार से?'' (20:1-8)।
   ख. दाख की बारी का दृष्टांत; ठुकराए हुए पत्थर पर शिक्षा (20:9-19)।
   ग. कैसर को कर देने का प्रश्न (20:20-26)।
   घ. पुनरुत्थान पर प्रश्न (20:27-39)।
   ङ. दाऊद के पुत्र के विषय में प्रश्न (20:40-44)।
   च. ''शास्त्रियों से चौकस रहो'' (20:45-47)।
   छ. विधवा का दान (21:1-4)।
   ज. मन्दिर और भविष्य पर संदेश (21:5-38)।
4. फसह का षड्यन्त्र (22:1-6)।
5. गुरुवार:
   क. अन्तिम भोज (22:7-38)।
   ख. गतसमनी का बाग (22:39-46)।

ग. अन्तिम दिन:

1. पकड़वाया जाना (22:47-53)।
2. महायाजक के सामने पेशी (और पतरस द्वारा इनकार किया जाना) (22:54-65)।
3. महासभा द्वारा पुष्टि (22:66-71)।
4. पिलातुस के सामने ले जाया गया (23:1-6)।
5. हेरोदेस के पास ले जाया गया (23:7-12)।
6. पिलातुस के पास वापस लाया गया: ''बरअज्बा या यीशु?'' (23:13-25)।

7. कलवरी के मार्ग में (23:26-31)।
8. यीशु मेरे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया (23:32-49)! (क्रूस पर पश्चाज़ाप करने वाले डाकू की कहानी लूका में विलक्षण है।)
9. अरिमतिया के रहने वाले यूसुफ द्वारा गाड़ा जाना (23:50-56)।

V. मनुष्य के पुत्र की सिद्धता (24:1-53)। (यीशु के पुनरुत्थान से पता चल गया कि वह केवल मनुष्य नहीं, बल्कि इससे कहीं बढ़कर है; देखें रोमियों 1:4)।

क. खाली कब्र:
1. कब्र पर जा रही स्त्रियां (24:1-11)।
2. पतरस का भाग कर खाली कब्र पर जाना (24:12)।

ख. पुनरुत्थान के दर्शन:
1. इज़्माऊस के मार्ग पर जाने वाले दो लोगों को (24:13-35)। (यीशु वैसे ही प्रिय मित्र के रूप में दिखाई दिया जैसे वह पहले था।)
2. ग्यारह को: ग्रेट कमीशन; यरूशलेम में प्रतीक्षा करने का निर्देश (24:36-49)।

ग. स्वर्गारोहण (24:50, 51)।

घ. प्रतीक्षा करने के लिए चेलों का यरूशलेम में लौटना (24:52, 53)। (यहां लूका ने अपनी कलम रख दी-कुछ देर बाद ही दोबारा प्रेरितों के काम की कहानी लिखने के लिए।)

सारांश

क. इस तरह लूका का "जो यीशु आरज़्भ से करता और सिखाता रहा" का वृज़ांत पूरा हुआ (प्रेरितों 1:1)।
1. उसकी मेज़।
2. उसके आंसू।
3. उसकी पेशियां।
4. उसका पेड़।
5. उसकी कब्र।
6. उसकी विजय।

ख. मनुष्य का यह सिद्ध पुत्र आज भी जीवित है, और वह *आपकी* सहायता कर सकता है (देखें इब्रानियों 4:15, 16)।

टिप्पणियां

[1]लूका और प्रेरितों की काम पुस्तक के लेखक का सामग्री के दृष्टिकोण से सबसे बड़ा योगदान है। [2]निकालने की इस प्रक्रिया की चर्चा मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1961), 173. [3]उसके नाम के लातीनी रूप का अर्थ है ''रोशनी लाने वाला।'' यूनानी में ''लूका'' का इस्तेमाल मूल स्थान के लिए हो सकता है: ''लुकानिया से।'' [4]बाद के एक हस्तलेख में प्रेरितों 11:28 में ''हम'' है, (ब्रूस मैज़र, *ए टैक्सचुअल कमैन्ट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 3रा संस्क. [न्यू यॉर्क: अनलिमिटिड बाइबल सोसाइटीज़, 1971], 344-45)। [5]लूका 1:1-4 में लूका का परिचय संकेत देता है कि वह यीशु को निजी तौर पर नहीं जानता था, परन्तु ''आरम्भ से'' (इस पद में दो बार इस्तेमाल) संकेत देता है कि वह कलीसिया के प्रारम्भिक इतिहास में मसीही बन गया था। [6]बइबल से बाहर की प्रेरणा के अनुसार, लूका को यीशु के प्रारम्भिक जीवन कीद जानकारी यीशु की माता मरियम से मिली। [7]1 तीमुथियुस 5:18 (65 ईस्वी के लगभग लिखा गया), पौलुस ने मत्ती 10:10 या लूका 10:7 से उद्धृत किया। [8]इस पद की तुलना प्रेरितों 1:1 से करें। [9]''प्रकाशन'' से भाव पुस्तक की प्रतियां बनाने और उनके वितरण से है। [10]मत्ती, मरकुस और यूहन्ना को इस वाक्य से निकाल दिया जाए।

[11]पवित्र आत्मा ने लूका को खोज करने में अगुआई दी होगी। निश्चिय ही, उसने खोज से प्राप्त सामग्री का इस्तेमाल करने में लूका को अगुआई दी। [12]पुसतक के ज़ोर देने पर विचार करें, जिनकी चर्चा इस पाठ में आगे की गई है। [13]मत्ती ने ज़ोर दिया कि पण्डित लोग राजा के दर्शन को आए थे, जबकि लूका ने ज़ोर दिया कि चरवाहे एक बालक को देखने आए। [14]आत्मा के काम पर यह ज़ोर प्रेरितों के काम की पुस्तक में ज़ारी रहा। [15]मत्ती की पुस्तक में लूका से अधिक अध्याय हैं, परन्तु लूका की पुस्तक में सामग्री अधिक है। NASB वाली मेरी प्रति में मत्ती तीस से अधिक कुछ पृष्ठ लेता है जबकि लूका बत्तीस पृष्ठों पर अपनी बात कहता है।